श्री के. कामराज के सम्मान में स्मारक सिक्के जारी करने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

27 अक्तूबर, 2004
नई दिल्ली

देश के एक महान सपूत भारत रत्न श्री के कामराज के सम्मान में अपने विचार व्यक्त करने पर मुझे गर्व महसूस हो रहा है। एक राजनेता के रूप में वे आज राजनीतिक जीवन में मौजूद सभी लोगों के लिए एक उदाहरण हैं। वे एक ऐसे नेता थे जो पूरी तरह लोगों के कल्याण के प्रति समर्पित थे। वे एक ईमानदार और साधुप्रवृत्ति के आदर्श और दूरदर्शी तथा अत्यंत कुशल प्रशासक थे। यह अकारण ही नहीं है कि उनके निधन के इतने वर्षों बाद भी उन्हें एक हस्ती के रूप में सराहा जाता है और "कर्मवीर" कहकर पुकारा जाता है।

भारत रत्न श्री कामराज स्वतंत्रता सेनानियों की उस विशेष जमात से संबंद्ध थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को सही मायनों में एक जन आंदोलन बनाने के लिए गांधीजी का रास्ता अपनाया और अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जब वे लगभग 15 साल के थे, तभी जलियांवाला नरसंहार हुआ, जिसने उनका जीवन ही बदल डाला। अभी वे 18 वर्ष के ही हुए थे, कि उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग के गांधीजी के आह्वान को सुना और इस संदेश को लेकर गांवों में पहुंच गए। महान स्वतंत्रता सेनानी श्री सत्यमूर्ति उनके राजनीतिक गुरू थे। श्री कामराज ने आजादी से पहले के तीन दशकों में गांधीवादी अहिंसक जनसंघर्षों में हिस्सा लिया और अपने जीवन का काफी समय उन्होंने विभिन्न जेलों में बिताया। वे हार न मानने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता और चतुर आयोजक थे।

श्री कामराज ने 1954 में तत्कालीन मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री पद को बेमन से स्वीकार किया और इस पद पर रहते हुए 9 सालों में उन्होंने एक कुशल, व्यावहारिक और कारगर प्रशासक की अपनी छाप छोड़ी। इनका प्रशासन एक सादी सी सलाह पर आधारित था। वे अपने मंत्रियों को सलाह देते थे "समस्या का सामना करो। उससे बचो नहीं। समाधान ढूंढों चाहे कितना भी छोटा हो अगर आप कुछ करोगे तो लोग संतुष्ट होंगे"। यह ठोस सलाह आज भी सरकार और जन प्रशासन को चलाने वाले हम लोगों के लिए उतनी ही प्रासांगिक है।

अपने बचपन में वे जिस चीज से वंचित रह गए थे, उन्होंने उसपर सबसे पहले ध्यान दिया वह चीज थी शिक्षा। उनका लक्ष्य सभी गांवों में प्राथमिक स्कूल खोलने का था। उन्होंने ग्यारहवीं कक्षा तक मुफ्त शिक्षा की शुरूआत की। देश में पहली बार दोपहर के भोजन की योजना शुरू की गई और यह आज एक अग्रणी योजना है जिसे देश भर में लागू किया जा रहा है। यह उनकी दूरदृष्टि और सपने का एक उदाहरण है।

उन्होंने सिंचाई और राज्य में बुनियादी ढांचा बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया। श्री वेंकटरमण के महत्वपूर्ण सहयोग से कई मध्यम और लघु उद्योग खोले गए। संयोग से श्री वेंकटरमण आज हमारे साथ हैं। इस दिशा में उनके प्रयासों का परिणाम यह है कि आज तमिलनाडु एक ऐसा राज्य है, जिसमें कम से कम क्षेत्रीय असमानताएं हैं।

तीन बार लगातार मुख्यमंत्री चुने जाने के बाद 1963 में श्री कामराज ने कांग्रेस में घटते उत्साह को देखा और मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया। उन्होंने पार्टी का काम करने का फैसला किया। उन्होंने कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं के लिए अपने पदों से इस्तीफा देने और पार्टी में नई जान फूंकने में अपनी ताकत लगाने के लिए कामराज योजना की हिमायत की। यह योजना सार्वजनिक जीवन में बलिदान और सेवा के साथ-साथ सत्ता को त्यागने का एक आदर्श बन गई। ये आदर्श आज हमने फिर से अपनी अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी में देखे हैं।

1964 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। और वे दो प्रधानमंत्रियों की मृत्यु के बाद के दिनो में देश का उन उथल-पुथल भरे वर्षों में मार्गदर्शन करते रहे। 1976 में राष्ट्र ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया। लेकिन श्री कामराज एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका स्मरण बार-बार किया जाना चाहिए और स्मारक सिक्का जारी करना एक ऐसा ही अवसर है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम याद करते हैं कि श्री कामराज के आदर्श क्या थे। सादगी और विनम्रता उनके गुण थे । वे अमीर नहीं थे और न ही वे अमीर बने। वे एक आम आदमी की तरह बोले, चले और उन्होंने आम आदमी की तरह ही खाया तथा कपड़े पहने। औपचारिक शिक्षा की कमी की अपनी पहली दिक्कत को उन्होंने शीघ्र ही पूरा कर लिया और उन्होंने अंग्रेजी के साथ-साथ राष्ट्रीय तथा विश्व की जानकारी हासिल कर ली। उन्हें **असामान्य आम समझ-बूझ वाला आम आदमी का आदमी** कहा जाता था और जो बिल्कुल ही सही था।

साधारण पृष्ठभूमि से निकले श्री कामराज सादगी, ईमानदारी, साहस और गरीबों के लिए करुणा की प्रतिमूर्ति थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें आम आदमी का प्रिय बनाया और जो उन्हें प्यार से **पेरुंथालाइवार** यानि एक महान नेता कहकर पुकारा करते थे। भारत के इस महान सपूत के सम्मान में स्मारक सिक्के को जारी करना उनकी स्मृति के प्रति इस सरकार की एक विनम्र श्रंद्धाजलि है। मुझे विश्वास है कि इससे उनके लाखों प्रशंसकों और अनुयाइयों के मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ेगी। लेकिन उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके सभी अनुयायी अपने सार्वजनिक जीवन में उन मूल्यों का पालन करें जिन्हें श्री कामराज ने प्रोत्साहित किया।

जय हिन्द।